प्रकाशन तिथि : 15 मई, 2021
प्रेषण तिथि : 19 मई, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 05 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

वर्चुअल माध्यम से मनाई महाराणा प्रताप जयंती

(श्री प्रताप फाउंडेशन का भव्य एवं ऐतिहासिक वर्चुअल कार्यक्रम)

9 मई को आंग्ल पंचांग अनुसार महाराणा प्रताप की जयंती के अवसर पर श्री क्षत्रिय युवक संघ से संबद्ध संस्था श्री प्रताप फाउंडेशन के तत्वावधान में प्रातः 11 बजे कोरोना महामारी से उत्पन्न हालातों के बीच वर्चुअल माध्यम से फाउंडेशन के संयोजक एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ व वयोवृद्ध स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी के सानिध्य में महाराणा प्रताप जयंती का भव्य आयोजन किया गया जिसमें संघ से संबद्ध यूट्यूब चैनल व विभिन्न फेसबुक पेजेज के माध्यम से लगभग 10000 लोग पूरे कार्यक्रम के

दौरान लाईव जुड़े रहे एवं कार्यक्रम के बाद लगातार यह संख्या बढ़ते बढ़ते शाम तक लगभग एक लाख हो गई। इस कार्यक्रम में समाज के राजनीतिक नेतृत्व के प्रतिनिधि के रूप में केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, राजस्थान विधानसभा में उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र सिंह राठौड़, राजस्थान के परिवहन मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास, उच्च शिक्षा मंत्री भंवरसिंह भाटी, पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष राव राजेंद्र सिंह, बीज निगम के पूर्व अध्यक्ष एवं राजस्थान के मुख्यमंत्री की टीम के सदस्य धर्मेंद्र सिंह राठौड़ व पूर्व विधायक महाराज रणधीर सिंह भींडर जुड़े एवं महाराणा प्रताप के प्रति अपनी शब्दांजलि प्रकट की। सभी राजनेताओं ने कार्यक्रम में शामिल होकर यह संदेश दिया कि अलग अलग राजनीतिक दलों में काम करते हुए भी समाज के आह्वान पर सामाजिक अनुशासन को स्वीकार करते हुए वे परिवार के एक सदस्य के रूप में सदैव उपलब्ध हैं।

इतिहास पर हो रहे आक्रमणों के प्रति सजग रहें : सरवड़ी

हमारे देश में ऐसे लोग पैदा हो रहे हैं जो हमारे इतिहास को विकृत करने पर तुले हैं, वे अपनी कुंठाओं और ईर्ष्या के कारण लगातार हमारे इतिहास पर आक्रमण कर रहे हैं। राजस्थान के स्कूली पाठ्यक्रम में किए गए मिथ्या बदलाव इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, ऐसे में हमें सावधान रहना है एवं शालीनता पूर्वक इनके प्रति अपना विरोध जताना है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार महाराणा प्रताप पर आक्रमण हुआ उसी प्रकार छोटी छोटी घटनाओं के माध्यम से हमारे पर सांस्कृतिक आक्रमण हो रहे हैं, हमारे इतिहास पर आक्रमण हो रहे हैं। कभी कोई महाराणा प्रताप पर अमर्यादित टिप्पणी करता है, उटपटांग बोलता है तो निश्चित रूप से आग लगती है। कभी हमारे राजाओं को मर्यादाहीन कह दिया जाता है, कभी महाराजा सुहेलदेव को पासी या भाजबर बता दिया जाता है, कभी प्रतिहारों, परमारों, सोलंकियों आदि को गुज्जर बता दिया जाता है तो कभी कांधल राठौड़ों द्वारा बसाये चुरू के संस्थापक किसी और को बता कर प्रचार किया जाता है। ये बातें छोटी छोटी लगती हैं लेकिन बहुत घातक हैं। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

अस्तित्व को तिरोहित न होने दें- शेखावत

महाराणा प्रताप का जीवन अपने अस्तित्व को तिरोहित ना होने देने के लिए संघर्ष का परिचायक है। आज हमारा समाज जिस तरह से अपने अस्तित्व को निरंतर लगातार खोता जा रहा है, अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है ऐसे समय में समाज के सच्चे और निष्ठावान व्यक्ति के लिए प्रेरणा का स्रोत महाराणा प्रताप का जीवन ही हो सकता है कि हम हमारे अस्तित्व को तिरोहित न होने दें। भारत सरकार में कैबिनेट मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने जयन्ती कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपरोक्त बात कही। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

आने वाली पीढ़ियों के लिए हम इतिहास बनायें- राठौड़

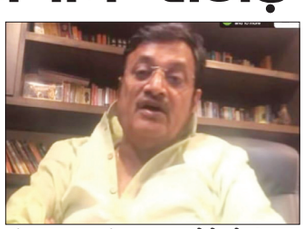

राजस्थान विधानसभा में उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र सिंह राठौड़ ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि आज इस वैश्विक महामारी में इस वर्चुअल कार्यक्रम के माध्यम से हमारे इतिहास को जनमानस के सामने लाने का जो प्रयास किया जा रहा है, यह प्रशंसनीय है। यह एक ऐसा दौर है जब यह बहस की जा रही है कि अकबर महान है या महाराणा प्रताप महान है। हमारे इतिहास को तोड़ने मरोड़ने के प्रयास किए जा रहे हैं। ऐसे समय में इस प्रकार के आयोजन से निश्चित तौर पर हमें प्रेरणा मिलती है। आज हम महाराणा प्रताप को स्मरण करते हैं जबकि उनके समकालीन अनेकों राजा महाराजा हुए किंतु उन को स्मरण नहीं करते हैं क्योंकि उन्होंने शत्रु की अधीनता स्वीकार कर ली थी। वैसे सभी लोग इतिहास के आगोश में समा गए। यदि महाराणा प्रताप भी उस समय मुगलिया सल्तनत की दासता स्वीकार कर लेते तो विश्व उन्हें स्वतंत्रता और स्वाभिमान के प्रतिमान के रूप में याद नहीं रखता। कर्नल टॉड ने एक जगह लिखा है कि यदि महाराणा प्रताप का इतिहास हिंदुस्तान के इतिहास में से मिटा दिया जाए तो इतिहास सिमट कर कुछ पन्नों में रह जाएगा। मेवाड़ के इस गौरवशाली इतिहास को हमें अपनी विरासत के रूप में देखना चाहिए। 57 वर्ष के छोटे से जीवनकाल में और 24 वर्ष के छोटे से शासनकाल में धरती के मान और सम्मान का जो संघर्ष प्रताप ने किया, आज लोग आश्चर्य से उसके बारे में बात करते हैं।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा रचित बदलते दृश्य पुस्तक के सत्रहवें प्रकरण 'बदलते दृश्य' में मेवाड़ के शासक महाराणा कुम्भा का उल्लेख आया है, इस बार हम उनके बारे में जानेंगे।

महाराणा कुम्भा महाराणा मोकल के ज्येष्ठ पुत्र थे, जो मोकल की मृत्यु के बाद छोटी अवस्था में ही 1433 ई. में मेवाड़ के शासक बने। जब कुम्भा मेवाड़ के शासक बने तब उनके समक्ष राज्य की कई आन्तरिक समस्याएं थी जो निरन्तर मेवाड़ को कमजोर कर रही थीं। सबसे पहले कुम्भा ने ऐसे सामन्तों की तरफ ध्यान दिया जो व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा व स्वार्थों में मेवाड़ को शक्तिहीन कर रहे थे। इनमें चचा और मेरा प्रमुख थे और उनका सहयोग महवा पंवार कर रहा था। महाराणा मोकल की हत्या के षड्यंत्र में भी इन्हीं का हाथ था। इनके कारण मेवाड़ के सामन्तों के मध्य अनेक गुट बन गए थे। महाराणा कुम्भा ने दृढ़ता से इस स्थिति का सामना किया, चचा-मेरा पहाड़ियों में छिप गए और भीलों को अपने साथ मिलाने का प्रयास किया। कुम्भा ने उनके विरुद्ध सेना भेजी, चचा और मेरा मारे गए। उनके विद्रोह का दमन कर कुम्भा ने मेवाड़ में बनने वाली दलबन्दी को समाप्त किया और भीलों को भी अपने भावी सैन्य अभियानों में सहयोगी बनाया। शासन के प्रारम्भिक वर्षों में कुम्भा ने मेवाड़ की आन्तरिक व्यवस्था को ठीक किया, साथ ही मेवाड़ के नजदीकी राज्यों को अपने प्रभाव में लाकर राजस्थान में अपना नेतृत्व स्थापित किया। महाराणा कुम्भा मालवा और गुजरात की बढ़ती शक्ति को राजस्थान के लिए घातक समझते थे इसीलिए सबसे पहले उन्होंने मेवाड़ का विस्तार करने और एक केन्द्रीय शक्ति के निर्माण के लिए सैन्य अभियान प्रारम्भ किया। महाराणा कुम्भा ने नागौर, गागरोण, बूंदी, आबू, अजयमेरू, चाटसू आदि क्षेत्रों पर विजयी प्राप्त की जिनमें से कुछ को मेवाड़ राज्य में मिला लिया गया तो कुछ को अधीनस्थ सहयोगी के रूप में रखा गया। मेवाड़ के दोनों पार्श्वों की ओर अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने के बाद कुम्भा ने अपना ध्यान मालवा की बढ़ती शक्ति को नष्ट करने की ओर लगाया। दक्षिणी मेवाड़ और मालवा के मध्य भू-भाग पर कई अन्य जातियां रहती थीं जो कभी मेवाड़ की ओर तो कभी मालवा की ओर झुकाव रखती थीं। उन सभी को मेवाड़ के प्रभाव क्षेत्र में लाने के लिए मालवा की शक्ति को नष्ट करना जरूरी था साथ ही मेवाड़ के विद्रोही महपा पंवार को मालवा ने शरण दे रखी थी। महाराणा कुम्भा ने एक बड़ी सेना लेकर मालवा पर आक्रमण किया। सारंगपुर के पास महाराणा कुम्भा के नेतृत्व में मेवाड़ी वीरों ने मालवा की सेना पर तीव्र आक्रमण किया, राजपूतों के इस आक्रमण का सामना मालवा की सेना नहीं कर पाई और परास्त होकर भाग खड़ी हुई। भागती मुस्लिम सेना का मारडू तक पीछा किया गया और मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी को बन्दी बना कर चित्तौड़ लाया गया। इस विजय के उपलक्ष्य में भगवान विष्णु के निमित्त महाराणा कुम्भा के कीर्ति स्तम्भ का निर्माण करवाया। छह माह की कैद के बाद सुल्तान द्वारा क्षमा याचना करने पर महाराणा कुम्भा ने उसे कैद से मुक्त कर उसका राज्य लौटा दिया। इसके बाद अपनी पराजय का बदला लेने के लिए महमूद खिलजी ने कालान्तर में मेवाड़ पर दो बार आक्रमण किया परन्तु उसे हर बार पराजय का सामना करना पड़ा। इस समय नागौर पर मुस्लिम शासन था, नागौर के स्वामी फिरोज खां के मरने के बाद उसका पुत्र शम्स खां नागौर का शासक बना, परन्तु उसके छोटे भाई मुजहिद खां ने उसे हटा कर स्वयं नागौर का शासक बन बैठा। शम्स खां ने महाराणा कुम्भा से सहायता की याचना की, महाराणा कुम्भा ने मुजाहिद खां को परास्त कर शम्स खां को पुनः नागौर का शासक बनाया, परन्तु शासक बनते ही उसने धार्मिक विभेद की नीति अपना कर नागौर में मंदिरों को ध्वस्त करना प्रारम्भ कर दिया, गौ-वध को बढ़ावा दिया। इसकी सूचना जब महाराणा को मिली तो उन्होंने नागौर पर सैन्य अभियान किया। शम्स खां गुजरात की सुल्तान की सहायता प्राप्त कर महाराणा कुम्भा से मुकाबला करने आया। गुजरात और नागौर की सम्मिलित सेना को कुम्भा ने परास्त कर नागौर पर अधिकार कर लिया, शम्स खां गुजरात भाग गया। महाराणा कुम्भा ने नागौर के किले को तुड़वा दिया, मस्जिद को जला दिया गया, नागौर को चारागाह में बदल दिया गया। गुजरात के सुल्तान कुतुबुद्दीन को जब अपनी सेना के पराजय की जानकारी मिली तो वो एक विशाल सेना के साथ चित्तौड़ पर आक्रमण के लिए चला, उसने अपने सेनापति मलिक शहबान को आबू पर आक्रमण के लिए भेजा और स्वयं कुम्भलगढ़ की ओर गया। मलिक शहबान को आबू में भयंकर पराजय का सामना करना पड़ा। सुल्तान को जब अपने सेनापति के पराजय की सूचना मिली तो महाराणा की शक्ति से भयभीत हो सुल्तान वापिस गुजरात की ओर लौट गया, मार्ग में उससे मालवा के सुल्तान का दूत ताज खां आकर मिला और चम्पानेर नामक स्थान पर मालवा और गुजरात में कुम्भा के विरुद्ध एक समझौता हुआ। समझौते के अनुसार मालवा और गुजरात की सेनाओं ने अलग-अलग दिशा से मेवाड़ पर आक्रमण किया परन्तु महाराणा कुम्भा ने दोनों को परास्त किया अब मेवाड़ उत्तर भारत की सर्वोच्च शक्ति बन गया था। अब मेवाड़ पर आक्रमण का साहस किसी अन्य राज्य में न था। इतिहास में महाराणा कुम्भा का जो स्थान एक विजेता के रूप में है वैसा ही महत्व स्थापत्य और विद्योन्नति के लिए भी है। कुम्भा ने मेवाड़ को सामरिक रूप से सुदृढ़ करने के लिए 32 दुर्गों का निर्माण करवाया, कुम्भलगढ़ का दुर्ग उसकी सामरिक योग्यता का ज्वलंत उदाहरण है। दुर्गों के अतिरिक्त महाराणा कुम्भा ने अनेकों मंदिर तथा जलाशयों का भी निर्माण करवाया। महाराणा कुम्भा एक उच्च कोटि के विद्वान और विद्यानुरागी थे। उनके द्वारा रचित ग्रन्थ संगीत राज, संगीत मीमांसा, सुड प्रबन्ध, गीत गोविन्द की रसिक प्रिया टीका, चण्डी शतक की व्यवस्था, अलग-अलग भाषाओं में लिखे गए नाटक उन्हें साहित्य के क्षेत्र में निपुण सिद्ध करते हैं। एकलिंग महातम्य से ज्ञात होता है कि कुम्भा वेद, स्मृति, मीमांस, उपनिषद, व्याकरण, राजनीति, संगीत सभी में निपुण थ। उनके दरबार में कवि अत्री, कवि महेश, कान्हा व्यास, मण्डन, नाथा आदि अनेक विद्वान आश्रय पाते थे। महाराणा कुम्भा के विरूद राणौ रासो, दान गुरु, राज गुरु, चाप गुरु, अभिनव भरताचार्य, हिन्दू सुरत्राण, रावराय उनकी श्रेष्ठता को सिद्ध करते हैं। महाराणा कुम्भा वीर, साहसी, योग्य सेनानायक, युद्धकला में निपुण ही नहीं थे वरन् वे शान्तिकाल की उपलब्धियों में भी सर्वोपरि थे। वे केवल मेवाड़ के नहीं भारत के शासकों में अग्रणी शासक थे।

- खींवसिंह सुल्ताना

विधानसभा उपचुनाव व समाज

राजस्थान में अभी हाल ही में तीन विधानसभा क्षेत्रों के उपचुनाव हुए। इन चुनावों में दो विधानसभा क्षेत्रों में सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी विजयी हुई वहीं एक सीट पर भाजपा विजयी हुई। हमारे समाज ने इन चुनावों में समझदारी भरा मतदान किया और पार्टियों को सकारात्मक संकेत दिया। सुजानगढ़ में राजपूत समाज भाजपा को वोट करता आया है। इस बार भाजपा ने उन व्यक्ति को उम्मीदवार बनाया जो पहले भी हमारे वोटों के सहयोग से विधायक बन चुके थे। लेकिन विधायक बनने के बाद वे वर्तमान प्रदेशाध्यक्ष जी के वर्ग के लोगों की गोदी में बैठे और हमारी उपेक्षा करने लगे। जिनकी गोदी में बैठे उन्हीं की सिफारिश से भाजपा प्रदेशाध्यक्ष जी ने इस बार फिर टिकट पकड़ा दी। समाज में इसकी प्रतिक्रिया हुई और परिणाम हमारे सामने है। एक तरफ तो प्रदेशाध्यक्ष जी को आईना दिखाया वहीं कांग्रेस के पक्ष में मतदान कर न केवल उसे जीताया बल्कि वहां प्रभारी के रूप में कार्य कर रहे हमारे समाज के एक राजनीतिज्ञ भंवरसिंह भाटी को भी मजबूत बनाया। दूसरी तरफ सहाड़ा में भी भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष जी ने अपना जाति प्रेम दिखाया और अपनी ही जाति के नेता को उम्मीदवार बनाया। राजपूत समाज ने यहां भी समझदारी भरा मतदान किया। राज्य सरकार ने हाल ही में EWS आरक्षण के आयु, फीस आदि की छूट दी और जिन धर्मेंद्र राठौड़ ने मुख्यमंत्री जी तक इस विषय को पहुंचाया, वे ही वहां चुनाव प्रभारी थे। उन्होंने इस विषय को समाज तक पहुंचाया और समाज ने कांग्रेस के पक्ष में मतदान कर जीत के अंतर को विशाल बना दिया। यही समझदारी राजसमंद में भी प्रकट हुई। राजसमंद से भाजपा उम्मीदवार के एक बड़े अंतर से जीतने की संभावना थी। वहां से कांग्रेस ने राजपूत की टिकट काटकर अन्य वर्ग को टिकट दी, प्रतिक्रिया स्वरूप समाज के वोट भाजपा को मिलने की पूरी संभावना थी। लेकिन नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया ने महाराणा प्रताप के प्रति बदजुबानी की, समाज उद्वेलित हुआ और परिणाम स्वरूप एक तरफा जीत काटे की टक्कर में बदल गयी। यहां भी परिणाम हमारी चाह के अनुरूप रहा। हम चाहते थे कि कांग्रेस यहाँ हारे क्योंकि कांग्रेस ने हमारी दावेदारी को नकार कर अन्य वर्ग को टिकट दी है और ऐसे में हमारे दावे को बरकरार रखने के लिए उनका हारना जरूरी था। वहीं नेता प्रतिपक्ष की बदजुबानी के कारण उनकी पार्टी को भी उनकी गलती का अहसास होना चाहिए इसलिए एकतरफा जीत भी नहीं होनी चाहिए और वही हुआ। 35-40 हजार मतों से जीत का आकलन सांसो को ऊपर नीचे करने वाला बना रहा और अंत में मात्र 5 हजार से जीत हुई। कुल मिलाकर यदि कोई गहराई से निष्पक्ष विश्लेषण करेगा तो उसके यह समझ में आएगा लेकिन राजनीतिक दल हमें श्रेय देने के प्रति सदैव कंजूस रहे हैं और वे तो सार्वजनिक रूप से हमारी निर्णायक भूमिका को स्वीकार करने से परहेज ही करेंगे लेकिन हमारे क्या हो गया है? हम क्यों हमारी इस निर्णायक भूमिका को मजबूती से नहीं रखें? हमें सभी मंचों का इस्तेमाल करते हुए हमारी प्रभावी भूमिका को प्रचारित भी करना पड़ेगा क्योंकि आजकल के सत्ता प्रतिष्ठानों को जो अस्थायी जनमत प्रभावित करता है, वह बहुत कुछ प्रचार तंत्र पर निर्भर करता है।

कोराना प्रोटोकॉल के अनुरूप सादगी पूर्ण विवाह

संघ के बीकानेर संभाग के संभागप्रमुख रेंवतसिंह जाखासर की पुत्री सुशीला कंवर का विवाह महणसर निवासी स्वयंसेवक बलवंतसिंह के पुत्र मनमोहन सिंह के साथ 25 अप्रैल को सरकार द्वारा निर्देशित कोरोना गाईड लाईन के अनुरूप सादगी से संपन्न हुआ। वरपक्ष की ओर से मेहमानों को यथार्थ गीता व संघ साहित्य भेंट स्वरूप दिया गया।

प्रेमकंवर बनीं डाक्टर

जैसलमेर के पूनमनगर गांव निवासी प्रेमकंवर पुत्री आम्ब सिह भाटी MBBS की पढाई कर डाक्टर बनी हैं। प्रेम कंवर ने संघ के 7 शिविर किये हैं तथा संघ में सक्रिय रूप से जुडी रही हैं। उनकी दोनों छोटी बहनें कंचन कंवर व रेखा कंवर ने भी संघ के शिविर किए हैं। झालावाड़ मेडिकल कालेज से अपनी MBBS की डिग्री पुर्ण करने वाली प्रेम कंवर प्रारंभ से ही मेधावी छात्रा के रूप में नवोदय विद्यालय की विद्यार्थी रही है। प्रेम कंवर व उनके परिवार को इस सफलता के लिए बधाई।

वर्चुअल माध्यम से मनाई महाराणा प्रताप जयंती

(पृष्ठ एक से आगे)

(श्री प्रताप फाउंडेशन का भव्य एवं ऐतिहासिक वर्चुअल कार्यक्रम)

हम प्रताप को केवल योद्धा तक सीमित न करें- शाहपुरा

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष राव राजेंद्र सिंह शाहपुरा ने अपने उद्बोधन में कहा कि हम सब आज चिर परिचित व्यक्तित्व, युद्ध के संघर्ष में कौशल के प्रतीक, वीरता के अनुपम रूप प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप की जयंती मनाने के लिए इस वर्चुअल कार्यक्रम में सम्मिलित हुए हैं। मानव जीवन के क्षेत्र के एक उत्कृष्टतम व्यक्तित्व का परिचय इतिहास के पन्नों में किस प्रकार केवल योद्धा की भूमिका तक सिमट गया, यह भी हम आज विचार करें। व्यथा और वेदना के संसार में जब महापुरुष पवित्र जीवन जीकर अपना समस्त जीवन बलिदान कर देते हैं तो ऐसे महापुरुष समाज और संस्कृति को एक नया मोड़ दिया करते हैं। व्यथा और वेदना इस बात की हैं कि सिर्फ युद्ध के कौशल और योद्धा के रूप में ऐसे महान व्यक्तित्व को, उसकी पहचान को हम सीमित कर गए। अपने जीवन काल में 1540 से 1597 तक सिर्फ 15 वर्ष का, डेढ़ दशक का कार्यकाल ऐसा था जहां युद्ध कौशल का परिचय उन्होंने पूर्ण रूप से दिया, लेकिन हम स्मरण करें कि उस कार्यकाल के अतिरिक्त उन्होंने कितना साहित्य हमें दिया, कितना मानव चरित्र हमें दिया। हमें स्मरण होना चाहिए कि वह ऐसा कालखंड था जिसमें रहीम भी थे और जिस में तुलसी भी थे। महाराणा प्रताप का वृतांत और अमर सिंह का वह दृष्टांत जिसमें अब्दुर्रहीम खानखाना, जिसे हम बाद में रहीम दास के रूप में जानते हैं, उनकी पत्नी को उनके बच्चों समेत अमर सिंह जी जब ले आए तब महाराणा प्रताप के चरित्र का उस समय संपूर्ण समाज के सामने जो चित्रण हुआ कि उन्होंने शत्रु की पत्नी को भी किस आदर और मयार्दा के साथ पुनः लौटाया। (शेष पृष्ठ 6 पर)

सबकी अच्छाई से सीखें- धर्मेंद्र सिंह

हम सब में कोई न कोई कमी है लेकिन हर व्यक्ति में कोई ना कोई अच्छाई भी है। हम यदि उन अच्छाइयों को ही देखना शुरू कर दें तो हर व्यक्ति से हम कुछ ना कुछ सीख सकते हैं। राजस्थान में ईडब्ल्यूएस की अव्यवहारिक शर्तों को हटवाने के लिए राज्य सरकार तक हमारी बात पहुंचाने में महत्वपूर्ण सहयोग देने वाले राजस्थान बीज निगम के पूर्व अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह राठौड़ ने कार्यक्रम में अपने विचार रखते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि आज इस शानदार कार्यक्रम में राष्ट्रीय गौरव, राष्ट्रभक्त, प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप की जयंती पर मैं उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं। जैसा राजेंद्र सिंह जी शाहपुरा ने अपने उद्बोधन में बताया कि महाराणा प्रताप का युद्ध कौशल और स्वतंत्रता संघर्ष के अतिरिक्त भी संस्कृति और साहित्य के क्षेत्र में अमूल्य योगदान रहा, इस बात को हम भूले नहीं और ऐसी जानकारी हमें इस कार्यक्रम के माध्यम से मिल रही है, यह अत्यंत महत्वपूर्ण बात है। महाराणा प्रताप के जीवन में जितनी प्रेरणा मिलती है उसका एक अंश मात्र भी यदि हम ले सकें तो हम अपने जीवन को सार्थक कर सकते हैं। मैं भी एक राजनीतिक कार्यकर्ता हूं और मैंने जब चुनाव लड़ा तब मुझे भी श्री प्रताप फाउंडेशन से सहायता मिली। यह ऐसी संस्था हैं जो न केवल राजपूत राजनेताओं की सहायता करती है बल्कि समाज में संगठन और संस्कार के प्रसार का कार्य भी करती है। भगवान राम से लेकर आज तक हमारे समाज के महापुरुषों ने इस देश को, समाज को मार्गदर्शन प्रदान किया है। ऐसे समाज के महापुरुषों के प्रति यदि कोई अमर्यादित टिप्पणी करता है तो यह अत्यंत खेद जनक हैं, ऐसा नहीं होना चाहिए। उनका हमें मिलकर विरोध करना चाहिए। (शेष पृष्ठ 6 पर)

प्रताप एक व्यक्ति नहीं विचार- खाचरियावास

मैं कहना चाहूंगा कि सब कुछ वापस आ सकता है लेकिन बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आ सकता। सही समय पर जिन लोगों ने चुनौती के साथ, जिंदादिली के साथ अपना जीवन जिया, जो कभी झुके नहीं, अपनी बात पर अड़े रहे उनका ही इतिहास लिखा गया। जीवन और मृत्यु दो ही सच्चाई इस संसार में हैं, इस बात को महाराणा प्रताप जानते थे इसलिए उनका एक ही संकल्प था कि प्रताप लड़ सकता है, मर सकता है लेकिन झुक नहीं सकता। स्वाभिमान और स्वतंत्रता के प्रति उनका जो यह संकल्प था, उस संकल्प को दुनिया सलाम करती है। इसका कारण है कि महाराणा प्रताप एक व्यक्ति नहीं एक विचार हैं। वे अपने आप में एक आंदोलन थे और लोकतांत्रिक व्यवस्था की शुरूआत करने वाले भी वही थे। गोगुंदा में जब महाराणा प्रताप का राजतिलक हुआ तब उनका राजतिलक जनता द्वारा किया गया। समाज में उत्साही, बेबाक और पुरुषार्थी राजनेता के रूप में छवि रखने वाले राजस्थान सरकार के कैबिनेट मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि सर्वप्रथम मैं श्री प्रताप फाउंडेशन को इस भव्य कार्यक्रम के आयोजन के लिए बधाई देता हूं। आज हम सभी एक परिवार के रूप में इस कार्यक्रम में उपस्थित हैं, यह एक महत्वपूर्ण अवसर है। जनता में महाराणा प्रताप के प्रति इतना गहरा विश्वास था कि यदि हमारा नेतृत्व कोई कर सकता है तो वह महाराणा प्रताप ही कर सकते हैं। (शेष पृष्ठ 7 पर)

दलगत मयार्दाओं में रहते हुए आवाज उठायें- भींडर

श्री प्रताप फाउंडेशन के तत्वावधान में यह कार्यक्रम आयोजित हो रहा है। समाज की इस बैठक में आज हम सभी बैठे हैं तो हमें इस बात पर भी विचार करना होगा कि यदि हमारे समाज या हमारे महापुरुषों पर कोई आक्षेप लगाता है, अनर्गल टिप्पणी करता है तो दलगत मयार्दाओं का ध्यान रखते हुए भी उसके विरुद्ध हमें आवाज उठानी चाहिए। आज समाज को लगता है कि हमारे जनप्रतिनिधि अपने दल के गलत व्यक्ति के खिलाफ भी कुछ नहीं बोलते हैं, इस छवि को बदलने की आवश्यकता है। भींडर के पूर्व विधायक महाराज रणधीर सिंह भींडर ने अपने संबोधन में यह बात कही। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप की जीवनी को तो हम सभी जानते हैं लेकिन इस गौरवमयी इतिहास से हम भविष्य का निर्माण कैसे करें, इस विषय में हमको सोचना होगा। महाराणा प्रताप के जीवन के ऐसे

अनेकों उदाहरण हैं जिनको हम अपने जीवन में उतार सकते हैं। जैसे बदली हुई परिस्थितियों के अनुसार अपनी रणनीति को बदलना। जिस प्रकार प्रताप ने आमने-सामने के युद्ध के साथ छापामार युद्ध का भी प्रयोग किया उसी प्रकार हमें भी परिस्थितियों के अनुरूप अपनी रणनीति बनानी चाहिए। प्रताप की भांति हमें भी सबको साथ लेकर चलना होगा। क्षत्रिय धर्म सर्वोपरि है। अन्यों की रक्षा ही क्षात्रधर्म है। धर्म कभी नष्ट नहीं होता। यदि हम उसका पालन नहीं करेंगे तो अन्य लोग उसको अपना लेंगे। (शेष पृष्ठ 6 पर)

महाराणा प्रताप महापुरुषों में अग्रगण्य- भाटी

त्याग, बलिदान, निरंतर संघर्ष और स्वतंत्रता के रक्षक के रूप में सम्पूर्ण विश्व में यदि भारत के किसी महापुरुष को याद किया जाता है तो महाराणा प्रताप का उनमें सर्वोपरि नाम है, वे अग्रगण्य हैं। महाराणा प्रताप का जो त्याग और बलिदान मय जीवन रहा, उन्होंने स्वतंत्रता के लिए अपना सब कुछ त्याग कर दिया और जंगलों में भटकना स्वीकार किया पर विदेशी शासक की अधीनता स्वीकार नहीं की। स्वतंत्रता संघर्ष में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, ऐसे महाराणा प्रताप को मैं बारंबार नमन करता हूं। राजस्थान सरकार में उच्च शिक्षा मंत्री भंवर सिंह भाटी ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप को मैं नमन करता हूं। आज श्री प्रताप फाउंडेशन के द्वारा स्वतंत्रता और स्वाभिमान के वैश्विक प्रतीक की जयंती पर इस कार्यक्रम में शामिल होकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है और ऐसे कार्यक्रम के आयोजन के लिए मैं आप सभी का

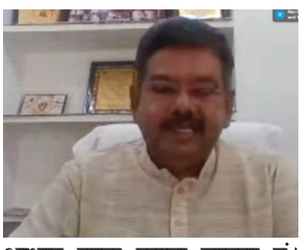

आभार व्यक्त करना चाहता हूं। कोरोना की परिस्थितियों को देखते हुए यह वर्चुअल आयोजन अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अवसर पर मैं पूज्य तनसिंह जी को भी नमन करता हूं कि जिन्होंने समाज को आगे बढ़ाने के लिए, समाज में संस्कारों के निर्माण के लिए और आधुनिक समय में हमारा समाज किस प्रकार आगे बढ़ सके उसके लिए हमारा मार्गदर्शन किया और श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। महाराणा प्रताप जिन्होंने आदर्शों, जीवन मूल्यों व स्वतंत्रता के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया था, मैं कहना चाहूंगा कि उन्होंने अपना संघर्ष सबको साथ लेकर के किया। (शेष पृष्ठ 7 पर)

संपादकीय

समाज, संघ और मैं

शीर्षक में वर्णित तीनों सत्ताओं में समाज तीनों में बड़ी सत्ता है। मैं और संघ समाज के लिए हैं लेकिन कौनसा समाज? समाज की परिभाषा अलग अलग दृष्टिकोण से अलग अलग की जा सकती है। लेकिन एक सामान्य परिभाषा यह हो सकती है कि ऐसा जन समुदाय जिसमें कुछ मूलभूत समानताएं हों और जो अन्यों से भिन्न हों, उन समानताओं के कारण वे आपस में जुड़े हों, एक दूसरे को अपना मानते हों, उस जनसमुदाय को अपना मानते हों तो वह एक समाज कहलाता है और ऐसे में संपूर्ण गांव भी एक समाज है और उस गांव का एक वर्ग विशेष भी एक समाज है। समाज की इन विभिन्न परिभाषाओं में से इस आलेख के शीर्षक में उल्लेखित समाज से तात्पर्य हमारा क्षत्रिय समाज है। तब प्रश्न उठता है कि क्षत्रिय कौन? किसे मानेंगे हम क्षत्रिय? वह कौनसी मूलभूत समानता है जो क्षत्रियों को क्षत्रिय के रूप में परिभाषित करती है एवं उन्हें अन्यों से भिन्न करती है? इन सब प्रश्नों का एक ही उत्तर निकल कर आयेगा 'क्षत्रियत्व'। क्षत्रियत्व ही वह मूलभूत विशेषता है जो एक क्षत्रिय को क्षत्रिय के रूप में परिभाषित करती है और उसे अन्यों से भिन्न करती है। हमारे इस महान समाज की सनातन सार्थकता का कारण यह क्षत्रियत्व है और भविष्य में भी इसकी सार्थकता इसी आधार पर बनी रह सकती है। यह क्षत्रियत्व हर काल में, हर देश में और हर परिस्थिति में सार्थक बना रहता है इसलिए इसको देश, काल एवं परिस्थिति निरपेक्ष कहा जाता है। हमें क्षत्रिय के रूप में जीवित रहने के लिए, क्षत्रिय उपमा को सार्थक करने के लिए इस 'क्षत्रियत्व' की सदैव आवश्यकता बनी रहेगी इसलिए यह कहा जा सकता है कि 'क्षत्रियत्व' क्षत्रिय समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसका अभाव सबसे बड़ा अभाव है और उस अभाव की पूर्ति करने में प्रवृत्त होना ही सबसे बड़ी समाज सेवा है। यहां से हमारे इस आलेख के शीर्षक की दूसरी सत्ता 'संघ' का क्षेत्र शुरू होता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी अभाव की पूर्ति का मार्ग है। पूज्य तनसिंह जी ने इस अभाव को महसूस किया और यह समझा कि यदि मेरे इस महान समाज को क्षत्रिय के रूप में जीवित रहना है, अपनी क्षत्रिय की परिभाषा को सार्थक करना है तो क्षत्रियत्व की साधना करनी पड़ेगी। अपने इस अहसास को, अपनी इस समझ को धरातल पर अवतरित करने के लिए उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की जो एक ऐसा विश्वविद्यालय है जिसमें क्षत्रियत्व की शिक्षा ही नहीं दी जाती बल्कि उसे आचरण में अवतरित करने के लिए अभ्यास करवाया जाता है। इस प्रकार श्री क्षत्रिय युवक संघ क्षत्रियों के क्षत्रियत्व को जागृत करने, उसे क्रियाशील करने के मार्ग पर आरूढ़ करने के लिए स्थापित हुआ है और यही उसका मूल कार्य है। श्री क्षत्रिय युवक संघ इस हेतु अपनी स्थापना से लगातार विगत 75 वर्षों से कर्मशील है, किसी शाबाशी की चाह की उपेक्षा कर कर्मशील है, किसी निंदा से प्रभावित हुए बिना कर्मशील है। इस विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ क्यों बना है और क्या करता है। ऐसे में यदि कोई हमसे पूछे कि संघ समाज में शिक्षा के लिए क्या कर रहा है, सामाजिक रूढ़ियों के लिए क्या कर रहा है, राजनीति के लिए क्या कर रहा है, महिलाओं की स्थिति के लिए क्या कर रहा है, नौकरियों के लिए क्या कर रहा है, आर्थिक उन्नति के लिए क्या कर रहा है, अफसर बनाने के लिए क्या कर रहा है, लोगों के आपस के झगड़े निपटाने के लिए क्या कर रहा है आदि आदि तो इन सब प्रश्नों के उत्तर उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ इन सब प्रश्नों के लिए बना ही नहीं है, संघ के गठन की प्रेरणा ये समस्याएं नहीं है। जो लोग संघ की विगत 75 वर्षों की यात्रा का विवेचन उपरोक्त प्रश्नों के आलोक में करेंगे तो उनका यही प्रश्न होगा कि संघ ने अब तक क्या किया? तो उनके इस प्रश्न का उत्तर भी यही है कि संघ की यात्रा का उनका आकलन ही दोषपूर्ण है क्योंकि वे एक विश्वविद्यालय से यह पूछ रहे हैं कि उसने कितनी सड़कें बनाई या कितने अस्पताल बनाये? ऐसे में उनसे यही निवेदन किया जाना चाहिए कि विश्वविद्यालय सड़क नहीं बनाता बल्कि सड़क बनाने वाले इंजीनियर बनाता है, सड़क की योजना बनाने वाले, उस काम का समन्वय एवं निरीक्षण करने वाला अधिकारी बनाता है। विश्वविद्यालय अस्पताल नहीं बनाता बल्कि अस्पताल के लिए डॉक्टर, प्रशासक, नर्सिंग स्टाफ आदि तैयार करता है जो अस्पताल बनाते भी हैं और उसे संचालित भी करते हैं। इसी दृष्टिकोण से ऐसे प्रश्नकताओं को संघ को समझना चाहिए। संघ उनके द्वारा उठाये गए प्रश्नों को महत्वहीन नहीं मानता बल्कि समाज के लिए आवश्यक मानता है और यह भी मानता है कि ये सभी अभाव समाज में हैं और इन्हें दूर किया जाना चाहिए। समाज का कोई व्यक्ति या संगठन इस दिशा में काम करता है तो संघ केवल उसकी सराहना करके ही संतोष नहीं करता बल्कि अपने मूल काम को प्रभावित किए बिना उसका सहयोगी भी बनता है लेकिन इन सब कामों के कारण अपने मूल काम से अपनी ऊर्जा को प्रस्थापित करने में तनिक भी विश्वास नहीं करता। बल्कि यह मानता है कि यदि संघ अपने मूल काम से विचलित नहीं होता है, क्षत्रियत्व के जागरण में अनवरत संलग्न रहता है तो समाज के अन्य सभी प्रश्नों का समेकित समाधान संभव है इसलिए उसे अपने मूल काम में ही संलग्न रहना चाहिए। अब यहां एक नया प्रश्न खड़ा हो सकता है कि अब तक के प्रयास से इस विश्वविद्यालय से ऐसे कितने लोग निकले जिनका क्षत्रियत्व जागृत हुआ और उन्होंने समाज के अन्य प्रश्नों पर स्वयं को केन्द्रित किया। हालांकि ऐसे अनेक उदाहरण हैं और प्रश्नकर्ता अपने आस पास देखेंगे तो उत्तर भी मिल जाएगा लेकिन फिर भी संघ का यही मानना है कि संघ के मूल काम में ही इतनी ऊर्जा और श्रम की मांग है कि अब तक इस विश्वविद्यालय में जो भी लोग तैयार हो रहे हैं और वे अपने समस्त सांसारिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए इस काम के लिए जितना समय, साधन और ऊर्जा को समाज के लिए प्रस्तुत कर सकते हैं वह पूरी इसी विश्वविद्यालय में उसी मूल काम खप जाती है और इस विश्वविद्यालय से बाहर समाज के इतर कामों के लिए वह उपयोग नहीं हो पाती। ऐसे में इस आलेख के शीर्षक की तीसरी सत्ता 'मैं' की बारी आती है। यह सत्ता ही सब समस्याओं के हल की कुंजी है। यदि यह सत्ता इस बात के महत्व को समझ लेती है कि समाज का सबसे बड़ा अभाव क्षत्रियत्व का अभाव है और इस अभाव की पूर्ति के बिना समाज का अस्तित्व क्षत्रिय समाज के रूप में संभव नहीं है तो इस अभाव की पूर्ति हेतु हो रहे संघ के प्रयत्नों में गति आयेगी। इस काम को करने वाले लोगों की संख्या बढेगी, इस विश्वविद्यालय से दीक्षित लोगों की संख्या बढ़ेगी और ऐसा होगा तो विश्वविद्यालय की स्वयं की आवश्यकता की पूर्ति के पश्चात शेष ऊर्जा उन सब प्रश्नों के हल में संपूर्णता से संलग्न होगी जो प्रायः लोग करते रहते हैं और जिनका उल्लेख इस लेख के मध्य में किया गया है। इस प्रकार समस्त प्रकार के प्रश्नों का उत्तर मैं स्वयं हूं। मैं केवल प्रश्न खड़े करने की अपेक्षा उत्तर बनने का संकल्प लूं और उस संकल्प की पूर्ति के लिए क्षत्रियत्व की दीक्षा लेने हेतु स्वयं को इस विश्वविद्यालय को समर्पित करूं तो सब समाधान संभव है। ऐसा करने पर मैं समस्या का नहीं समाधान का हिस्सा बनता हूं और समाधान ही तो मेरी चाह है। इसलिए समाज को समझने के लिए, समाज के मुख्य अभाव को समझने के लिए, उस अभाव के विपरीत भाव को समझने, सीखने व आचरण में ढालने के अभ्यास के लिए और फिर उस आचरण द्वारा समाज के अन्य अभावों को दूर करने के लिए यह विश्वविद्यालय सदैव मेरे स्वागत को उत्सुक रहता है, क्या मैं स्वयं को प्रस्तुत करने को तत्पर हूँ?

खरी-खरी

आखिर मैं वोट किसको दूं

मैं एक वोटर हूं, इस लोकतांत्रिक व्यवस्था का आधार स्तंभ। इस लोकतांत्रिक व्यवस्था का कर्ता धर्ता भी कह सकते हैं आप मुझे। सैद्धांतिक रूप से आप कह सकते हैं कि मैं ही इस व्यवस्था का मालिक हूं, मेरी ही ईच्छा से सरकारें बनती हैं, शासक तय होते हैं और मेरी ईच्छा पर्यंत ही वे शासक बने रह सकते हैं। कितनी अच्छी लग रही है ये बातें और लगे क्यों नहीं हैं भी तो अच्छी हीं। जब कोई प्रधानमंत्री बनने वाला व्यक्ति, मुख्यमंत्री बनने वाला व्यक्ति आपको माई बाप कहे तो क्या आपको अच्छा नहीं लगेगा और जब आपको अच्छा लगता है तो मुझे क्यों नहीं लगेगा? इसीलिए मुझे इस लोकतंत्र की सैद्धांतिक बातें बहुत अच्छी लगती हैं, किताबों में इसके बारे में पढता हूं तो लगता है जैसे स्वर्ग को धरती पर इसी से उतारा जा सकता है। लेकिन ये बातें जितनी मुझे लिखने में और आपको पढ़ने में अच्छी लग रही हैं वैसी हैं नहीं। धरातल पर इसके विपरीत स्थिति होती है और इसीलिए मेरे सामने प्रश्न खड़ा होता है कि आखिर मैं वोट किसको दूं? क्या मैं उनको वोट दूं जिन्होंने वर्षों से भारतीयता को उपेक्षित रखा? जिनके लिए सत्ता प्राप्त करने के लिए धार्मिक तुष्टिकरण सर्वोच्च प्राथमिकता वाला साधन रहा और आज भी वे उसी की सीढी चढकर सत्ता के सलौने सपने देख रहे हैं। जिनका गैरजिम्मेदाराना आचरण प्रायः मीडिया के माध्यम से प्रकट होता रहता है और जो अपने विपक्षियों का विरोध करते करते कब राष्ट्र के विरोधी बन जाते हैं, इसका भी ध्यान नहीं रखते। जिनके लिए मधुबनी कोई मायने नहीं रखता पर जो हाथरस पर जमीन आसमान एक कर देते हैं। जो राष्ट्रीय आपदा को भी अपने विरोधियों को बदनाम करने का एक अवसर मानते हैं और जिनके लिए ऐसे अवसर बांछे खिला देने वाले होते हैं। इस राष्ट्रीय आपदा में भी जिनके नेतृत्व वाली राज्य सरकारें अपने दायित्व की बात करने की अपेक्षा केन्द्र सरकार के दायित्वों को याद दिला रही हैं और उनकी विफलता को भुनाने के लिए अपने राज्यों की जनता के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करने से बाज नहीं आ रहीं। जो केन्द्र सरकार की अदूरदर्शिता को तो उजागर कर रहे हैं लेकिन स्वयं द्वारा अपने राज्य में खतरे की घंटी बजने के बावजूद भी जीवन रक्षक मानी जाने वाली दवाईयों को अपनी पार्टी द्वारा शासित पड़ौसी राज्य में भेजे जाने के व्यवहार को गैरजिम्मेदाराना स्वीकार नहीं करते। मैं उन लोगों को कैसे वोट दे दूं जो मेरे जैसे मतदाताओं के वोट से राज्य के मंत्री बनने के बावजूद एक अभिनेता के अंगरक्षक के साथ फोटो खिंचवा कर स्वयं को कृतार्थ मानते हैं? लेकिन इधर से नजरें मोड़कर जब उधर देखता हूँ तब भी कोई आशा की किरण नजर नहीं आती क्योंकि उनको भी मैने कई बार आजमाया है और अभी भी आजमा ही नहीं रहा बल्कि झेल रहा हूं। ऐसे दल को भी मैं कब तक वोट देता रहुं जिसके लिए मैं मात्र वोटर हूं। जो मुझे एक मजबूर मतदाता मानकर मेरे वोट के बल पर सत्ता तो पाना चाहता है पर सत्ता में भागीदार किसी और को बनाकर मुझे सदैव हासिए पर बनाए रखना चाहता है? गैरजिम्मेदारी के नाम पर जो अनेक अवसरों पर पहले वालों से 19 नहीं बल्कि 21 ही सिद्ध हुआ है। उनको वोट कैसे दे दूं जो नोटबंदी की घोषणा कर उसकी विफलता का दायित्व लेने से बचते हैं? उसे भी वोट कैसे दे दूं जो अपने आपको सर्वेसर्वा दिखाने के लिए अचानक निर्णय करता है और फिर अपने सहयोगियों को उसे संभालने के लिए आगे करता है? उनको भी वोट कैसे दे दूं कि जब देश के कोरोना की आग में जलने की स्पष्ट आहट सुनाई दे रही थी तब वे किसी चुनावी सभा में बांसूरी बजा रहे थे। जो लोग भारतीयता के प्रति मेरी उद्दात भावनाओं को सत्ता की सीढीयां बनाकर उन पवित्र भावनाओं का शोषण करना चाहते हों और भारतीयता की चासनी में लपेट कर अपनी सत्ता लोलुपता को परोस रहे हों, उनको भी मैं वोट कैसे दे दूं? जिनके लिए मेरा जाज्वल्यमान इतिहास प्रयोगशाला बनता जा रहा है उनको मैं कैसे वोट दे दूं। अनेक लोग इन दोनों धाराओं का विकल्प बनकर भी मेरे सामने आते हैं और मुझे अपनी ओर आकर्षित करते हैं लेकिन मुझे पता है कि इनका कोई आधार नहीं है, ये इनमें से ही किसी को हराने या जिताने के लिए मौसमी बयार बनकर आते हैं और फिर इनकी ही आंधी में उड़ जाते हैं, उनको भी अपना वोट देकर मैं उसको खराब क्यों करूं? वे कहते हैं कि उनको आजमाना चाहिए तो मुझे इसमें भी कोई ऐतराज तो नहीं है लेकिन मेरा प्रश्न तो फिर भी बना रहता है कि वे अपने आपको साबित तो करें कि वे आज की राजनीति में स्थापित हो जाएंगे क्योंकि वे केवल मेरे वोट से ही तो जीत नहीं सकते। यदि वे स्वयं को साबित करते हैं तो मेरे लिए तो यह प्रसन्नता का विषय होगा कि मुझे वोट देनें का स्थान मिल गया है। वैसे भी मैं तो ऐसे अवसर पर साथ खड़ा भी हो जाता हूं पर अंत में निराशा ही हाथ लगती है। कुछ जोशीले लोग मुझे नोटा का बटन दबाने को कहते हैं लेकिन मैं समझ नहीं पाता कि इससे क्या होगा? यदि नोटा को मिले वोट परिणाम को बदलने लगें, नोटा के वोट अधिक होने पर चुनाव रद्द होने लगें तब तो यह बटन दबाना सार्थक है अन्यथा तो मुझे उसके विरुद्ध वोट देना चाहिए जिसको मैं हराना चाहता हूं और जीतने वाले को अहसास करवाना चाहिए कि तुम मेरे सहयोग से जीते हो। इसलिए यह विकल्प भी मुझे रास नहीं आता। हालांकि अभी निकट भविष्य में किन्हीं बड़े चुनावों में मुझे वोट नहीं देना है पर फिर भी देश के भाग्यविधाता बनने का दंभ भरने वाले राजनीतिक दलों की स्थिति देखकर मेरे लिए प्रश्न तो खड़ा हुआ ही है कि मैं किस पक्ष के लिए मानस बनाऊं। वोट तो फिर भी मुझे देना ही होगा क्योंकि यह मेरा नागरिक दायित्व है और मैं अपने दायित्व से मुंह कैसे मोड़ सकता हूं? इसलिए पाठकों से निवेदन है कि आप भी चिंतन करें और कोई हल निकल कर आये तो जरूर बतावें।

संघर्ष के पर्याय महाराजा छत्रसाल से प्रेरणा लेने का आह्वान

भारत के लंबे मध्यकालीन इतिहास के बारे में प्रायः यह मिथ्या धारणा प्रसारित की गई कि वह बाहर से आई विदेशी शक्तियों के शासन का काल था और भारत में उनका साम्राज्य था जबकि वास्तविकता यह है कि कभी भी ऐसी शक्तियों का पूरे भारत पर शासन नहीं रहा। अलग अलग क्षेत्रों में अनेक स्वतंत्र शासकों ने अपना स्वतंत्र शासन बनाये रखा। अनेक ने उन शक्तियों से संघर्ष कर अपना स्वतंत्र साम्राज्य स्थापित किया। सर्वाधिक शक्तिशाली, धर्मांध और क्रूर मुगल शासक औरंगजेब के शासन काल में भी ऐसे अनेक महापुरुष हुए जिन्होंनें अपनी स्वतंत्रता कायम ही नहीं रखी बल्कि अपने पुरुषार्थ के बल पर स्वतंत्र साम्राज्य स्थापित भी किया। ऐसे ही महापुरुष थे महाराजा छत्रसाल बुंदेला। उनका जन्म 4 मई 1649 को तब हुआ जब उनके पिता चंपतराय से ओरछा छिन गया और वे अपनी पत्नी सहित वनों में रहकर संघर्षरत थे। असाधारण परिस्थितियों में जन्मा वह बालक इतना असाधारण सिद्ध हुआ कि 10-12 वर्ष की अल्प आयु में माता पिता के देहावसान के बाद से ही स्वयं को भविष्य की चुनौतियों के तैयार किया। मिर्जा राजा जयसिंह की सेना में रहकर स्वयं को अप्रतिम योद्धा के रूप में तैयार किया और शिवाजी महाराज के मार्गदर्शन में अलबेले बुंदेले वीरों का नेतृत्व कर मुगलों के खिलाफ मोर्चा खोला। इटावा, खिमलासा, गढ़कोटा, धामौनी, रामगढ, शाहगढ़ आदि पर अधिपत्य कर अपना स्वतंत्र साम्राज्य स्थापित किया। अपने शौर्य और पराक्रम के बल पर मुगल सेनापति सरदार तहवर खां, अनवर खां, दलेह खां, सैयद अफगान आदि को धूल चटाई। महाराजा की उपाधि धारण की और 1678 ई. में पन्ना को अपनी राजधानी बनाया। यमुना, नर्मदा, चंबल और टोंस नदियों को अपने राज्य की सीमा बनाकर विशाल साम्राज्य स्थापित किया। युद्ध के मैदान की कठोरता के साथ साथ साहित्य जैसे कोमल विषयों को भी संरक्षण दिया। 10 वर्ष की उम्र से लेकर 85 वर्ष की उम्र में देहावसान तक एक श्रेष्ठ योद्धा और शासक के रूप में अपनी कीर्ति पताका फहराई। ऐसे महान पूर्वज की जयंती श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखाओं में वर्चुअल माध्यम से 4 मई को मनाई गई। जयपूर संभाग द्वारा सायं 6 बजे कार्यक्रम रखा गया जिसमें बुंदेलखंड से संघ के सहयोगी विजय सिंह तोमर व डा. महेंद्र सिंह तोमर जुड़े। इस कार्यक्रम में जयपुर के अलावा अन्य स्थानों के स्वयंसेवक भी जुड़े और महाराजा छत्रसाल के जीवन के बारे में जाना। केन्द्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ, संभाग प्रमुख राजेंद्र सिंह बोबासर आदि ने भी अपने विचार प्रकट किए। इसी प्रकार शाम 8.45 पर श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा लगाई जाने वाली शाखा में भी प्रदेश भर से सहयोगी जुड़े। खींव सिंह सुल्ताना ने उनके इतिहास के बारे में जानकारी दी एवं शेष सभी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सभी ने मध्यकाल के इस अविजित योद्धा से प्रेरणा लेने का आह्वान किया एवं अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

कोरोना काल और संघ कार्य

कोरोना काल की असाधारण परिस्थितियों के बीच विभिन्न प्रयोगों के माध्यम से संपर्क व समन्वय का काम जारी है। सभी संभागों में वर्चुअल शाखाओं व बैठकों का दौर जारी है। 3 मई की केन्द्रीय पाक्षिक समीक्षा बैठक के बाद 4 मई को नागौर व महाराष्ट्र संभागों के संभाग प्रमुखों ने अपने प्रांत प्रमुखों के साथ वर्चुअल बैठक की एवं केन्द्रीय बैठक में हुई चर्चा से अवगत करवाया। इसी प्रकार जालोर एवं बालोतरा संभाग की भी बैठक रखी गई और केन्द्रीय बैठक के निर्णयों से अवगत करवाया। अभय सिंह रोडला के साथ जालोर संभाग की भी बैठक रखी गई। जिसमें सोशल मीडिया के सार्थक उपयोग पर चर्चा हुई। जालोर संभाग में 6 मई को भीनमाल प्रांत के स्वयंसेवकों और उभरते स्वयंसेवकों की बैठक रखी गई जिसमें संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी व प्रांत प्रमुख नाहर सिंह जाखड़ी ने इन परिस्थितियों में संघ से कैसे जुड़े रह सकें, इस बाबत बताया। 5 मई को नागौर संभाग के लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत द्वारा संभागीय शाखा में अधिकतम संख्या दिवस मनाया गया जिसमें प्रांत के स्वयंसेवकों के अलावा संघ के सहयोगी एवं कई नये स्वयंसेवक भी शामिल हुए। इस शाखा का विषय था संघ, समाज और मैं। इस कार्यक्रम में बताया गया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ स्वधर्म पालन के लिए लगातार अभ्यास करवा रहा है, संघ की सामुहिक संस्कारमय कर्म प्रणाली को विस्तार पूर्वक बताया। फिर समाज को परिभाषित किया कि ऐसे लोगों का समुह जिनकी परंपराएं, रीति-रिवाज, चाल चलन, सामाजिक एवं सांस्कृतिक, धार्मिक मान्यताएं समान हो समाज कहलाता है। हम सब अपने कर्त्तव्य कर्म करें इसके लिए अभ्यास करना होगा। पूज्य श्री तनसिंह जी ने यही संदेश हमको दिया है। इस पर मेरा अपना स्वयं का क्या दायित्व है, मैं क्या कर सकता हूं, वो मुझे करना चाहिए। संभाग प्रमुख शिम्भुसिंह आसरवा ने संघ, समाज और मैं विषय पर अपने उद्बोधन में वर्तमान समय में हम क्या कर रहे हैं एवं क्या कर सकते हैं, हमें क्या करना चाहिए इस पर विस्तार पूर्वक एवं उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया। वर्तमान समय में हम छोटे छोटे कार्यों द्वारा समाज में सहयोग एवं अपना कर्तव्य पालन करते हुए हमारे उद्देश्य की प्राप्ति की और प्रवृत्त हों। संघ समाज से बड़ा नहीं है अपितु समाज का अंग है एवं यदि शरीर में कोई विकृति आ जाये तो उसका उपचार करना अति आवश्यक हो जाता है यही कार्य संघ कर रहा है। इसके बाद गुगल मीट शाखा में जुड़े सभी समाज बंधुओं ने अपने अपने विचार व्यक्त किए एवं आगे भी इसी प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करने का सुझाव दिया। आज शाखा में वरिष्ठ स्वयंसेवक भगवतसिंह जी सिंघाना, देवीसिंह मामडोहा, जयसिंह सागु, शिवराज सिंह सांवराद, विनोद सिंह बरांगना सहित कई लोग शामिल हुए। 5 मई को मेवाड़ वागड़ एवं मेवाड़ मालवा संभाग की वर्चुअल समीक्षा बैठक का आयोजन संभाग प्रमुख ब्रजराज सिंह खारड़ा एवं केंद्रीय प्रतिनिधि गंगा सिंह साजियाली के सानिध्य में किया गया। संभाग प्रमुख ब्रजराज सिंह खारड़ा ने बताया कि प्रतिमाह 3 व 18 तारीख को केंद्रीय समीक्षा में संघ कार्य की रिपोर्ट देनी होती है इसलिए हम सब इसमें सहयोग करें। प्रत्येक रविवार को माननीय महावीर सिंह जी के सानिध्य में होने वाली केंद्रीय शाखा में सभी स्वयंसेवकों को जुड़ने का आह्वान किया गया। इसके अलावा केन्द्रीय बैठक में हुई चर्चा से अवगत करवाया गया। जयपुर की शाखा में एक नया प्रयोग किया गया जिसमें गुण ग्राही बनने की चर्चा की गई एवं अपने परिवार के सदस्यों, पड़ौसी आदि के गुण बताने को कहा गया। शाखा में रामचरितमानस पर चर्चा की जा रही है। जालोर की संभागीय शाखा का रविवार और गुरुवार को छोड़कर प्रांतवार एक एक दिन का दायित्व दिया गया जिसमें वे नित्य जुड़ने वालों के अतिरिक्त संबंधित दिन अपने प्रांत के अधिकतम लोगों को जोड़ेंगे। बाड़मेर संभाग में प्रति सोमवार महाराणा प्रताप के जीवन के विभिन्न पक्षों को बताने के लिए अलग अलग विशेषज्ञों को जोड़ा जा रहा है।

बालोतरा संभाग का वर्चुअल स्नेहमिलन केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह जी रणधा के सान्निध्य में 8 मई को सम्पन्न हुआ। रणधा ने बताया कि संघ ने हमें जो स्नेह व सम्मान दिया है, उस पर हम कहाँ हैं? इस पर आत्मचिंतन करें। इस विषय पर सभी से चर्चा की तथा सभी ने अपने-अपने विचार प्रकट किए। साथ ही उन्होंने संघ के हीरक जयंती वर्ष पर श्री प्रताप फाउंडेशन के द्वारा वर्चुअल माध्यम से आयोजित होने वाले महाराणा प्रताप जयंती पर अधिकतम लोगों को जुड़ने का आह्वान किया। कार्यक्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवक गंगासिंह जी साजियाली, संभाग प्रमुख मुलसिंह जी काठाड़ी सहित 40 से अधिक स्वयंसेवको ने हिस्सा लिया। उत्तर गुजरात संभाग में 9 मई को प्रातः 9 से 10 बजे तक प्रताप जयंती के संबंध में वर्चुअल कार्यक्रम रखा गया जिसमें महाराणा के जीवन को लेकर चर्चा की गई।

(पृष्ठ एक का शेष)

इतिहास पर...

ये छोटे छोटे आक्रमण दूरगामी प्रभाव पैदा करते हैं। इन्हीं छोटी छोटी बातों के बल पर इतिहास बदल दिया जाएगा और हमारी आने वाली पीढी को फिर वही पढाया जाएगा। अभी हमने सुना की बैठक में जूड़े हमारे दो महानुभावों ने राणा पूंजा को भील बताया क्योंकि ऐसा ही प्रचार किया गया और सत्य को छिपा दिया गया। हमने भी इसे स्वीकार कर लिया जबकि राणा पूंजा पानरवा रियासत के सोलंकी शासक थे। इसलिए हमें सजग रहना पड़ेगा, इन आक्रमणों का विरोध करना होगा, इसके लिए पर्याप्त तैयारी करनी पड़ेगी। लेकिन विरोध भी हमारी मर्यादा के अनुरूप होना चाहिए। शालीनता को खो देंगे तो हम मर्यादा को भूल जाएंगे। जिनसे हमें काम करवाना है उन्हें पहले ही हमारा दुश्मन बना लेंगे। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन एवं श्री प्रताप फाउंडेशन इस विषय में काम कर रहे हैं, इन विषयों को शालीनता पूर्वक प्रभावी तरीके से उठा रहे हैं, हम सबका इसमें सहयोग मिल रहा है, उसे जारी रखें यह आप सबसे निवेदन है।

माननीय महावीर सिंह जी ने महाराणा प्रताप की चर्चा करते हुए कहा कि वे बचपन से ही महाराणा उदयसिंह से उपेक्षित रहे। जब महाराणा उदयसिंह की मृत्यु हुई तो केवल इसलिए मेवाड़ छोड़कर जाने को तत्पर हुए कि कहीं उनके कारण परिवार में बिखराव पैदा न हो,उन्होंने अधिकार की अपेक्षा परिवार के प्रति दायित्व को महत्व दिया लेकिन मेवाड़ के सरदारों ने जगमाल को हटाकर उनका राजतिलक कर महाराणा स्वीकार किया। भारत के एक पूर्व नेता ने महाराणा प्रताप को सिरफिरा लिखा और लिखा कि अकबर भारत को एक करना चाहता था लेकिन प्रताप उसमें रोड़ा बने हुए थे। उनसे कोई पूछे कि क्या करता अकबर भारत को एक करके, मीना बाजार लगाता? दूसरी महिलाओं से जबरदस्ती शादी करता? चित्तोड़ को जीतने के बाद जैसा नरसंहार किया वैसा नरसंहार करता? विडंबना ही है कि उसको महान बताया जा रहा है। उधर महाराणा प्रताप ने दुश्मन की महिलाओं को भी आदर सहित वापस भेजा, अपने पुत्र को यह कहकर भेजा कि तुमने इनका हरण कर गलती की है, इस गलती का प्रायश्चित यही है कि तुम स्वयं छोड़कर आओ इन्हें, चाहें इसमें तुम्हारा जीवन चला जाए। एक वह चरित्र है और एक यह चरित्र, निर्णय करें कि महान कौन था। उन्होंने कहा कि प्रताप का चरित्र इतना उज्जवल था कि विदेशी लोग भी उनके बारे में जानने को लालायित रहते हैं। विश्वभर में स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले हर व्यक्ति के लिए प्रताप आदर्श रहे हैं। प्रताप के संघर्ष के बारे में अनेक भ्रम पैदा किए गए, भामाशाह को ऐसे प्रकट किया जाता है जैसे वे प्रताप के उद्धारक रहे हों जबकि भामाशाह ने जो धन दिया वह मेवाड़ के खजाने का ही धन था। प्रताप द्वारा अकबर को पत्र लिखे जाने का भ्रम फैलाया गया जबकि उन्होंने कोई पत्र अकबर को नहीं लिखा था। उन्होंने अकबर द्वारा पैदा की गई शंका पर पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा पूछने पर शंका के निवारण हेतु पृथ्वीराज को जरूर पत्र लिखा था लेकिन उसी को आधार बनाकर भ्रमपूर्ण तथ्य गढे गये। मानसिंह के अपमान की भी कोई घटना नहीं हुई, यदि हुई होती तो मानसिंह के पिता उसके तुरंत बाद प्रताप से मिलने नहीं जाते। इसलिए इतिहास के भ्रमपूर्ण लेखन के प्रति हमें सावधान रहना चाहिए, सजगता रखनी चाहिए। हमारे सभी यशस्वी पूर्वजों से प्रेरणा लेने के लिए उनको स्मरण करने के हर अवसर का लाभ लेना चाहिए। अंत में उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी भी हमारे पर आक्रमण है, इसका भी प्रताप से प्रेरणा लेकर रणनीतिक रूप से सामना करना चाहिए।

अस्तित्व को...

उन्होंने कहा कि यह हमारे परिवार का कार्यक्रम है और परिवार के सदस्य के रूप में इस कार्यक्रम में उपस्थित रहना हमारा कर्त्तव्य है। आप सभी को, जो इस कार्यक्रम से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं, मैं परिवार सहित महाराणा प्रताप जयंती की शुभकामनाएं देना चाहता हूं। उन्होंने कहा कि श्रद्धेय आयुवान सिंह जी हुडील ने एक लेख लिखा था जिसमें उन्होंने एक बहुत अच्छी समीक्षा की थी। उन्होंने पाश्चात्य विचार और भारतीय विचार की तुलना करते हुए उनमें मूलभूत अंतर को रेखांकित करते हुए वह लेख लिखा था। उसमें उन्होंने लिखा कि किसी भी समाज, जाति, देश या संस्थान का इतिहास उस समाज, जाति, देश व संस्थान के लिए सीख लेने का माध्यम यदि बनता है तभी वह समाज आगे बढ़ता है। यदि आने वाली पीढ़ियां अपने समाज के इतिहास से गौरवान्वित होना प्रारंभ कर देती हैं तो उस दिन से समाज में पतन होना प्रारंभ हो जाएगा। निश्चित रूप से हम सब के लिए महाराणा प्रताप प्रातः स्मरणीय हैं और ऐसे अनेकों महापुरुष हमारे समाज में हुए हैं, जो हमारे लिए अभिनंदनीय और वंदनीय हैं। उनके जीवन पर गौरव देश और दुनिया के सभी लोग करें और करते हैं किंतु मुझे यह लगता है कि हम सब लोग उनके जीवन से प्रेरणा लेकर किस प्रकार आगे बढ़ सकते हैं, यह समझना समाज की वर्तमान आवश्यकता है। भगवान श्रीराम का अभ्युदय और महाराणा प्रताप का अभ्युदय इन दोनों को यदि हम साथ रख कर देखें तो बहुत सारे साम्य हमें दिखाई देंगे। महाराणा प्रताप ने अपने प्रारंभिक जीवन में उपेक्षा और अपमान को सहा लेकिन यह एक कटु सत्य है कि उपेक्षा कभी प्रतिभा को तिरोहित नहीं कर सकती। महाराणा प्रताप का जीवन इसका साक्षात उदाहरण है। महाराणा प्रताप ने जन बल के आधार पर शक्ति अर्जित करके अपने व्यक्तित्व का अभ्युदय किया, ठीक उसी प्रकार जैसे श्री राम ने लंका विजय पर जाने से पूर्व जंगल में रहने वाले साधारण लोगों के साथ मिलकर एक विश्व विजयी सेना का निर्माण किया। जिस प्रकार भगवान श्रीराम ने वानर, भालू आदि प्रजातियों के आदिवासी-वनवासी लोगों को अपने साथ जोड़ा उसी प्रकार महाराणा प्रताप ने भी धांगर समाज, जिसे उस समय अस्पृश्य माना जाता था, उसे अपने साथ लिया, भील और मीणा जैसी जातियों को अपने साथ लिया और प्रशिक्षण देकर अपनी सेना की अग्रिम पंक्ति में खड़ा कर दिया। इनके अतिरिक्त महाराणा प्रताप ने जिस प्रकार से कला, संस्कृति और स्थापत्य कला को नई ऊंचाई देने का कार्य किया वह भी हम सब के लिए प्रेरणा का स्रोत है। मैं यह मानता हूं कि महाराणा प्रताप के जीवन से हम सबको सीखने की आवश्यकता है ना कि उसके ऊपर गौरव करने की। आज यदि इस शिक्षा को लेकर के हम इस कार्यक्रम से जाएं तो यह कार्यक्रम हमारे लिए सार्थक होगा। हम सब मिलकर के अपनी जाति के अस्तित्व को, जातीय गौरव को पुनर्स्थापित करने के लिए कार्य करें, अपने जातीय गौरव को अपने परिवार में स्थापित करने का कार्य करें तो निश्चित रूप से हम आगे जाकर के समाज और राष्ट्र में भी इस गौरव को स्थापित कर पाएंगे। केवल राजनीतिक और वैयक्तिक शक्ति से हम समाज का भला नहीं कर पाएंगे किंतु यदि समाज स्वयं शक्तिशाली बनेगा तो निश्चित रूप से आने वाले समय में हम सब अपने आप को और अपने अस्तित्व को प्रासंगिक बनाए रख सकेंगे।

आने वाली...

विश्व के किसी भी कोने में आज हम जाते हैं और वहां राजस्थान की बात होती है तो राजस्थान के साथ-साथ महाराणा प्रताप की बात स्वतः ही चल जाती हैं। उनकी शूरवीरता के बारे में सुनकर सभी को आश्चर्य मिश्रित गर्व होता है। आज भी हल्दीघाटी के इतिहास को जब याद करते हैं तो लोग कहते हैं कि कहीं ऐसा भी युद्ध हुआ जहां 80000 की फौज के सामने 22000 लोग पर्वत की तरह डट गए, तोप के सामने तीर कमान से लड़ाई लड़ी गई। महाराणा प्रताप को इतिहास में इसलिए भी याद किया जाता है कि उन्होंने एक संगठन कर्ता के रूप में भी अद्वितीय कार्य किया। उन्होंने बिखरे हुए लोगों को संगठित कर उन्हें मातृभूमि के सम्मान के लिए संघर्ष में नियोजित किया। आज जब हमारा इतिहास धीरे-धीरे विस्मृत होता जा रहा है ऐसे समय में इस प्रकार के आयोजन हमें प्रेरणा देते हैं और यह विशेषता श्री प्रताप फाउंडेशन में ही है कि ऐसी वैश्विक महामारी में भी इस प्रकार का आयोजन किया जा सके। इस प्रकार के कार्यक्रम, जहां हम अपनी राजनीतिक सीमाओं को परे करके एक जाजम पर आ सकते हैं, प्रेरणास्पद अवसर है। इसके लिए मैं श्री प्रताप फाउंडेशन को धन्यवाद देना चाहूंगा। साथ ही आज आवश्यकता इस बात की भी है कि वर्तमान, जो आने वाला इतिहास बनेगा, उसमें भी हम अपनी छाप इस प्रकार छोड़ें कि आने वाली पीढ़ियां हम से प्रेरणा ले सकें। Survival of the fittest के सिद्धांत को याद रखते हुए वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल हमें अपनी रणनीति और कार्यनीति को बदल कर सभी को साथ लेकर आदर्श नेतृत्व का उदाहरण प्रस्तुत करना होगा।

(पृष्ठ तीन का शेष)

हम प्रताप..

उसी कालखंड में तुलसीदास जी रामचरितमानस की रचना कर रहे थे। उन्हीं राम के वंशज महाराणा ने अपने कृतित्व से राम की मयार्दाओं को पुनर्जीवित कर दिया। यदि शेरपुरा वाली वह घटना नहीं घटती तो अब्दुर्रहीम खानखाना, जो एक सिपहसालार था, कभी भी रहीम दास नहीं बनता यह महाराणा प्रताप के चरित्र का ही एक उत्कृष्ट परिणाम है। ऐसे महान व्यक्तित्व को नतमस्तक होकर हम प्रणाम करते हैं। इतिहास इस बात का गवाह है कि साहित्य की कलम में कभी-कभी सत्य की परिभाषा को सत्यापित करने में कमी आ जाती हैं। शायद यही समय है कि जब हम इस बात को स्मरण करें कि जिस रहीम की कलम से श्री कृष्ण के बारे में इतना लिखा गया, उसकी प्रेरणा कहीं न कहीं उसे एकलिंग नाथ और श्रीनाथ के चरणों से मिली। भारत की संस्कृति के चरित्र को चरितार्थ करने के लिए उत्कृष्ट उदाहरण हमारे महापुरुषों ने सामने रखें। इसी प्रकार 15वीं शताब्दी में महाराव शेखा के कालखंड में उनके समकक्ष कबीर दास जी हुए। इसी प्रकार अनेकों उदाहरण हैं कि जब जब ऐसे युगपुरुष आए तब तब भारत की संस्कृति के प्रवाह में राम का, सत्य का प्रवेश अवश्य होता है। युद्ध में बल के साथ बुद्धि का प्रयोग तो बहुत से योद्धा करते हैं लेकिन बुद्धि के बल का प्रयोग करने वाले योद्धा विरले ही होते हैं। ऐसे ही महाराणा प्रताप थे, आज उनकी जयंती पर उनको शत शत नमन है।

सबकी...

उन्होंने आगे कहा कि समाज के युवाओं में आज ईडब्ल्यूएस को लेकर जो आशाएं और आशंकाए हैं उनको लेकर केंद्र सरकार से भी निवेदन है कि जिस प्रकार राजस्थान में ईडब्ल्यूएस की अव्यवहारिक शर्तों को हटाया गया उसी प्रकार केंद्र से भी इन शर्तों को हटाया जाए। हम सब के सामूहिक प्रयास से यह कार्य भी अवश्य सफल होगा ऐसी मुझे आशा है और केवल हमारे समाज को ही नहीं बल्कि आर्थिक रूप से कमजोर अन्य समाजों के युवाओं को भी इसका लाभ मिलेगा। श्री प्रताप फाउंडेशन को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूं कि ऐसे समय में जब कोरोना जैसी बीमारी से पूरा देश, पूरी दुनिया डरी हुई है ऐसी स्थिति में आपने समय निकालकर हमारे गौरव महाराणा प्रताप को ऐसे अनूठे कार्यक्रम द्वारा स्मरण किया।

दलगत...

हम जब तक संगठित रहे तब तक हमारा बोलबाला था लेकिन आज हम बिखरे हुए हैं। आज हमें हमारी संगठन शक्ति को और मजबूत करने की आवश्यकता है। हमें अपने इष्ट को भी प्रबल बनाने की जरूरत है। उन्होंने आगे कहा कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आरक्षण व्यवस्था की विपरीत परिस्थितियों में भी कई क्षेत्रों में हमारे लिए अवसर उपलब्ध हैं जिनका हमें पूरा लाभ उठाना चाहिए। जैसे रक्षा क्षेत्र में, व्यापार के क्षेत्र में आदि। इसी प्रकार शिक्षा पर भी हमें विशेष ध्यान देना चाहिए, खास कर के बालिका शिक्षा के क्षेत्र में। तभी हम आगे बढ़ सकेंगे। सत्ता और समाज में हमारी भागीदारी लोकतांत्रिक एकता के साथ होनी चाहिए। लोगों को लगना चाहिए कि ये सर्व समाज को साथ लेकर चलने वाले व्यक्ति हैं और इनको आगे लाया जाना चाहिए। तभी हमारी प्रतिष्ठा पहले की भांति बनी रह सकेगी। हम श्री राम के वंशज हैं तो उनका चरित्र भी हमें अपनाना होगा। प्रताप के जीवन से राष्ट्रप्रेम और प्रजावत्सलता आदि गुणों को हमें अपने चरित्र का अंग बनाना होगा। यही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

(पृष्ठ तीन का शेष)

महाराणा प्रताप... महाराणा प्रताप के बारे में जैसा रणधीर सिंह जी भींडर ने विस्तार पूर्वक बताया कि किस प्रकार उन्होंने भीलों की सेना बनाई, मीणा लोगों को साथ लिया और सभी के सहयोग से मेवाड़ की आन-बान-शान के लिए जीवन पर्यंत संघर्ष किया और मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं की, ऐसे महान व्यक्तित्व से आज हमें प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। आज आधुनिक समय में किस प्रकार महाराणा प्रताप का चरित्र हमारा मार्गदर्शन करता है इस बात को हमें समझना और समझाना चाहिए। हमें उन सभी महापुरुषों को निश्चित रूप से स्मरण करना चाहिए जो हमें प्रेरणा प्रदान करते हैं। चाहे वह महाराणा प्रताप हों, दुगार्दास राठौड़ हों या ऐसे ही अनेकों महापुरुष हों जो सभी के लिए प्रेरणा के स्त्रोत हैं। उनको स्मरण करने के लिए हमें निरंतर ऐसे आयोजन भी करने चाहिए, उनके जीवन पर चर्चा भी करनी चाहिए जिससे हमारी आने वाली युवा पीढ़ी हमारे महापुरुषों से, हमारे पूर्वजों से प्रेरणा ले सके और अपने जीवन में उनकी महानता को आत्मसात कर सके। मेरा इस कार्यक्रम के माध्यम से यह भी आग्रह रहेगा कि आज विश्व मातृ दिवस भी है। इस अवसर पर मातृशक्ति से मैं आग्रह करना चाहूंगा कि बालिका शिक्षा को हमें हमारे समाज में ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा देना चाहिए जिससे हमारी युवा पीढ़ी, हमारा आने वाला कल और भी ज्यादा शिक्षित हो सके और हमारा समाज आगे बढ़ सके।

प्रताप एक... इसके लिए मैं मेवाड़ की धरती को, वहां के लोगों को सैल्यूट करता हूं। हमारे पूर्वजों ने राज्य के मालिक बन कर नहीं बल्कि ईश्वरीय शक्ति के प्रतिनिधि के रूप में शासन किया। मेवाड़ के महाराणा ने स्वयं को सदैव एकलिंगनाथ जी का प्रतिनिधि माना उसी प्रकार जयपुर के महाराजाओं ने स्वयं को ठाकुर गोविंद देव जी का प्रतिनिधि माना। यह एक बड़ा संदेश है जिसमें लोकतंत्र के बीज विद्यमान हैं। महाराणा प्रताप की सेना को हम देखें तो उनकी सेना में हाकिम खां सूरी, भामाशाह, झाला मन्ना आदि विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि सम्मिलित थे। यह लोकतांत्रिक व्यवस्था का उत्कृष्ट उदाहरण है। आज के समय में प्रश्न यह नहीं है कि इस व्यवस्था में कौन सी राजनीतिक पार्टी राज करेगी। ये राज आते जाते रहेंगे, कुर्सियां आती जाती रहेंगी, पार्टियों के राज बदलते रहेंगे लेकिन इतिहास कभी नहीं बदला जा सकता। इतिहास को कोई चुनौती नहीं दे सकता। मैंने हर बार कहा कि किसी की भी सरकार आए लेकिन कोई भी नेता इतिहास नहीं बदल सकता है। महाराणा प्रताप किसी जाति के नहीं बल्कि उस धरती के प्रतिनिधि थे। अपनी धरती के सम्मान की रक्षा के लिए ही उनका सारा संघर्ष था। हमारे ऐसे महापुरुषों पर, शाका और जौहर जैसी हमारी महान परंपराओं पर जो प्रश्न उठाते हैं उनको हमें प्रत्युत्तर देना चाहिए चाहे वह किसी भी दल, जाति अथवा संस्था से संबंधित व्यक्ति हो। आज भी सभी समाज नेतृत्व के लिए हमारी ओर देखते हैं और यदि हम हमारे पूर्वजों की तरह सभी को साथ लेकर चलें तो कोई भी हमें पराजित नहीं कर सकता। उन्होंने EWS को लेकर युवाओं से जागृत होने व अधिकाधिक सर्टिफिकेट बनवाने का आह्वान किया और कहा कि यदि किसी को भी कोई समस्या आती है तो मुझसे सीधा संपर्क करें, मैं आप सभी के लिए हर समय उपलब्ध हूँ।

श्री राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष का दुःखद अवसान

श्री राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष श्री गिरिराजसिंह लोटवाड़ा का 29 अप्रेल को कोरोना महामारी के चलते देहावसान हो गया। श्री लोटवाड़ा जयपुर के RHUS अस्पताल में भर्ती थे और वहीं अंतिम सांस ली। वे लंबे समय से राजपूत सभा जयपुर में सक्रिय थे। 2010, 2013, 2016 व 2019 में अध्यक्ष बने एवं उससे पहले लगातार 17 वर्षों तक निर्वाचित महामंत्री रहे। आपके नेतृत्व में राजपूत सभा जयपुर ने शिक्षा, स्वरोजगार, सामाजिक कुरीतियों के शमन आदि विषयों में उल्लेखनीय कार्य किया। आपके निधन के समाचार से समाज में शोक की लहर छा गई। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक महावीर सिंह जी सरवड़ी ने अपना विडियो संदेश जारी कर माननीय संघप्रमुख श्री की ओर से शोक संदेश प्रसारित करते हुए उन्हें साहसी एवं लग्नशील समाज सेवक बताया।

करणीसिंह भेलु को पितृशोक

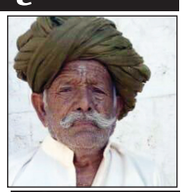

श्री कल्याण सिंह

संघ के नोखा कोलायत प्रांत के प्रांतप्रमुख करणी सिंह भेलु के पिताजी **श्री कल्याण सिंह रुपावत** का 27 अप्रेल को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार शोकसंतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है एवं परमेश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है।

अगर सिंह जैसिंधर को पुत्रशोक

अभय सिंह

बाड़मेर में संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक अगरसिंह जैसिंधर के पुत्र **अभय सिंह** का 7 मई को कोरोना महामारी के चलते देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं शोक संतप्त परिवार को संबल प्रदान करावें।

भवानीसिंह सुंई को पुत्रशोक

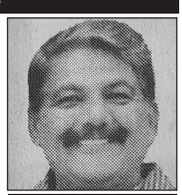

दिलीप सिंह

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक भवानीसिंह सुंई के पुत्र **दिलीप सिंह** का 10 मई को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने एवं शोक संतप्त परिवार को संबल देने की प्रार्थना करता है।

कालेवा बंधुओं को पितृशोक

श्री अर्जुन सिंह महेचा

बालोतरा संभाग में संघ के स्वयंसेवक सोहन सिंह एवं बलवंतसिंह कालेवा के पिता **श्री अर्जुन सिंह महेचा** का 74 वर्ष की आयु में 12 मई को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने एवं शोक संतप्त परिवार को संबल देने की प्रार्थना करता है। बलवंतसिंह भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी हैं और अभी उड़ीसा में पदस्थापित हैं।

भीमसिंह रेवाड़ा को पितृशोक

तगसिंह रेवाड़ा

सूरत में कार्यरत संघ के स्वयंसेवक भीमसिंह रेवाड़ा के पिता **तगसिंह रेवाड़ा** का 10 मई को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने एवं शोक संतप्त परिवार को संबल देने की प्रार्थना करता है।

भीमसिंह घोटड़ा का देहावसान

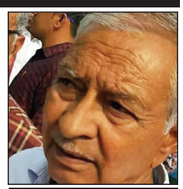

श्री भीमसिंह घोटड़ा

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **श्री भीमसिंह घोटड़ा** का 13 मई को देहावसान हो गया। इन्होंने अपने जीवन में संघ के 34 शिविर किए। आपका संघ से प्रारंभिक परिचय अगस्त 1967 में रोड़ा में आयोजित मा. प्र. शि. से हुआ। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने एवं परिवार को संबल प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

प्रदीप सिंह मोरडु को मातृशोक

श्रीमती पसम कंवर

पाली जिले में संघ के युवा स्वयंसेवक प्रदीप सिंह मोरडु की माताजी **श्रीमती पसम कंवर** का 26 अप्रेल को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार शोकसंतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है एवं परमेश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है।

प्रतापसिंह भवानगढ का देहावसान

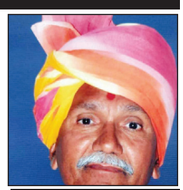

श्री प्रताप सिंह

गुजरात में संघ के स्वयंसेवक **श्री प्रताप सिंह भवानगढ** का विगत 7 मई को देहावसान हो गया। साबरकांठा में संघ कार्य को गति देने वाले प्रताप सिंह मई 1987 में रेवदर शिविर से संघ के संपर्क में आये एवं अपने जीवन में 29 शिविर किए। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं परिवार को संबल प्रदान करें।

सहदेव सिंह मूली को पितृशोक

श्री रणजीत सिंह

गुजरात में संघ के स्वयंसेवक सहदेव सिंह मूली के पिताजी **श्री रणजीत सिंह** वेरुभा परमार का 28 अप्रेल को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को एवं परिवार को संबल प्रदान करें।

सुरेन्द्र सिंह भद्रेसर को पुत्रवधु शोक

श्रीमती प्रिया बा

गुजरात में संघ के स्वयंसेवक सुरेन्द्र सिंह भद्रेसर की पुत्रवधु **श्रीमती प्रिया बा** योगेंद्र सिंह जड़ेजा का 30 अप्रेल को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार शोकसंतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हुए परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वह दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

श्यामसिंह जोरावरनगर का देहावसान

श्याम सिंह

संघ के युवा स्वयंसेवक **श्याम सिंह जोरावरनगर** का 8 मई को कोरोना के चलते देहावसान हो गया। 8 सितंबर 2000 को जन्में श्यामसिंह ने सितंबर 2013 में संघ का पहला शिविर किया। विगत 7 वर्षों में 13 शिविर कर एक सक्रिय स्वयंसेवक के रूप में जयपुर में क्रियाशील हुए लेकिन काल की गति के सामने हार गए। श्यामसिंह वयोवृद्ध स्वयंसेवक चैनसिंह बरवाली के दौहित्र थे। इनके दोनों मामोसा देवेन्द्र सिंह व गजेंद्र सिंह भी संघ के स्वयंसेवक हैं। पथप्रेरक परिवार अपने इस युवा सहयोगी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता है एवं परमेश्वर से परिवार को इस आघात को सहन करने की शक्ति देनें एवं दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है।

परिस्थिति अनुरूप प्रयोग कर बनाये रखें जीवंत संपर्क

पाक्षिक बैठक में हुई समीक्षा

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभाग प्रमुखों एवं केन्द्रीय कार्यकारियों के साथ संचालन प्रमुख जी की पाक्षिक समीक्षा बैठक 3 मई की शाम वर्चुअल माध्यम से संपन्न हुई। इस बैठक में संचालन प्रमुख जी ने विगत 15 दिन के संघ कार्य बाबत विभिन्न संभाग प्रमुखों से प्राप्त रिपोर्ट पर चर्चा करते हुए कहा कि 21 अप्रेल को रामनवमी का पर्व हमने वर्चुअल तरीके से संभागवार मनाया एवं सभी जगह अच्छी संख्या रही, पूरी टीम सक्रिय हुई। हमें ऐसे प्रयोग जारी रखने हैं ताकि महामारी की परिस्थिति में हमारा जीवंत संपर्क बना रहे। उन्होंने कहा कि विगत पखवाड़े में हमने एक और नया प्रयोग किया जिसके तहत केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में लगने वाली साप्ताहिक शाखा में गुगल मीट से जयपुर से बाहर बैठे लोगों को जोड़ा गया। यह प्रयोग जारी रहेगा, हम हमारे सहयोगियों को इसका अधिकतम लाभ लेने को प्रेरित करें ताकि उन्हें हमारे वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह जी सरवड़ी का प्रत्यक्ष सानिध्य मिल सके। इस प्रकार के प्रयोग संभाग प्रमुख अपने स्तर पर करें और विपरीत परिस्थितियों के बावजूद संघ कार्य को जारी रखें। उन्होंने संभाग प्रमुखों से कहा कि अगले 15 दिन में सभी अपने अपने

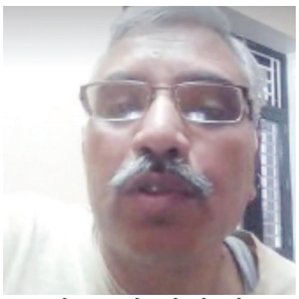

संभाग के स्वयंसेवकों से फोन पर बात करें एवं उसकी रिपोर्ट बनाकर केन्द्र को प्रेषित करें। संभाग के स्वयंसेवकों की केन्द्रीय सहयोगियों के साथ बैठक भी रखी जा सकती है। केन्द्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ के सुझाव पर संभाग प्रमुखों की दो पाक्षिक समीक्षा बैठकों में से एक में प्रांत प्रमुखों को भी जोड़ने का निर्णय लिया गया एवं इसके लिए प्रतिमाह 18 तारीख तय की गई। चर्चा में आये सुझावों के आधार पर तय किया गया कि संघ के सोशल मीडिया अकाउंट्स की पहुंच बढ़ाने के लिए सभी का सहयोग लिया जाए एवं इसके लिए संभाग की नियमित शाखाओं में चर्चा की जाए। नियमित वर्चुअल शाखाओं को रुचिकर बनाने के लिए अलग अलग विषयों के विशेषज्ञों को बुलाकर संबंधित विषय पर चर्चा की जा सकती है। प्रांत स्तर पर साप्ताहिक वर्चुअल शाखा लगाकर संघ के सहयोगियों एवं सद्भावियों से संपर्क बनाये रख सकते हैं। संचालन प्रमुख जी ने कहा कि समाज से जुड़े विषयों पर संघ श्री प्रताप फाउंडेशन व श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के माध्यम से कार्य करता है, उसमें पूर्ण सक्रियता से सहयोगी बनें। ऐसे कार्य समाज में सक्रियता लाने के साथ साथ उपयुक्त मंच पर उपयुक्त तरीके से अपनी बात रखने की प्रवृत्ति को बढावा देते हैं। संघशक्ति पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता के लिए हम अभी भौतिक संपर्क नहीं कर पा रहे हैं लेकिन हमारे पास संघशक्ति पथप्रेरक का एप बना हुआ है, उसको अधिकतम मोबाइल में डाउनलोड करवाने का अभियान प्रारंभ कर रहे हैं और खींव सिंह सुल्ताना इस कार्य का संयोजन कर रहे हैं। इसमें हम सब उनका सहयोग करें। बैठक में आगामी 15 दिन में आने वाले पर्वों, जयंतियों आदि की जानकारी दी गई एवं उन्हें संभाग या प्रांत स्तर पर आयोजित करने का निर्णय लिया गया। 9 मई को आंग्ल पंचांग अनुसार महाराणा प्रताप की जयंती है। यह कार्यक्रम श्री प्रताप फाउंडेशन द्वारा केन्द्रीय स्तर पर वर्चुअल माध्यम से मनाया जा रहा है। इस कार्यक्रम का संघ से जुड़े मीडिया अकाउंट्स पर लाईव प्रसारण किया जाएगा, इसमें हम सबको सहयोगी बनना है। अंत में मंत्रोच्चारण के साथ बैठक संपन्न हुई।

माननीय मुख्यमंत्री से प्रदेश की परिस्थितियों पर चर्चा

राजस्थान के मुख्यमंत्री माननीय अशोक गहलोत ने 13 मई को प्रातः फोन पर माननीय संघप्रमुख श्री से चर्चा की। दोनों ने एक दूसरे के स्वास्थ्य की कुशलक्षेम जानी एवं प्रदेश में महामारी की परिस्थितियों पर चर्चा की। संघप्रमुख श्री ने प्रदेश सरकार के प्रयासों में सहयोगी बनने का आश्वासन दिया एवं आश्वस्त किया कि हमारा समाज इस महामारी से निपटने में पूरा सहयोग कर रहा है और निरंतर करता रहेगा। संघप्रमुख श्री ने बाड़मेर के राणी रुपादे संस्थान में समाज द्वारा संचालित कोविड केयर सेंटर की भी जानकारी दी। उन्होंने यह भी बताया कि संघ ने यह आह्वान किया है कि समाज के लोग स्वयं के टीकाकरण का खर्च सरकार द्वारा सहयोग के लिए जारी खाते में जमा करवायें। माननीय मुख्यमंत्री से समाज के इस सहयोग के लिए आभार जताया एवं सरकार की तरफ से हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया।

गजराज सिंह को क्वींस अवार्ड

गजराज सिंह राठौड़ एवं उनकी कंपनी स्टार पैसिफिक युके को ब्रिटेन के सबसे बड़े ओफिसिएल अवार्ड 'द क्वींस अवार्ड' से नवाजा गया है। नागौर जिले के डेगाना तहसील के रेवत गांव के निवासी गजराज सिंह 10 वर्षों से अधिक समय से ब्रिटेन में व्यवसायरत हैं।

महाराणा प्रताप समस्त विश्व के लिए एक आदर्श- महेचा

(बाड़मेर संभाग में शुरू हुई साप्ताहिक कार्यक्रमों की श्रृंखला)

राजस्थान राज्य हमेशा से वीर प्रसूता भूमि के रूप में जाना जाता है।

यहां राणा कुम्भा, पृथ्वीराज चौहान, राणा सांगा जैसे अनेक वीर योद्धाओ ने जन्म लिया तथा अपनी वीरता के बल पर कई कीर्तिमान स्थापित किए परंतु महाराणा प्रताप हमें सबसे ज्यादा प्रेरित करते हैं क्योंकि उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में अपने सीमित साधनों से मुगलिया सल्तनत की नाक में दम करके भारत की स्वतंत्रता की मशाल को जलाए रखा। बाड़मेर संभाग की वर्चुअल शाखा को संबोधित करते हुए शिक्षाविद कमल सिंह महेचा ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप महान पराक्रमी, वीर योद्धा, नारी का सम्मान करने वाले महान नायक थे। वे न केवल राजस्थान बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए आदर्श हैं। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप ने अपनी रणनीति व युद्ध कौशल के बल पर अपने से कई गुना बड़ी सेना का ना केवल मुकबला किया बल्कि उसे परास्त भी किया। महाराणा प्रताप उच्च आदर्शों के धनी थे। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप ने बिना किसी भेदभाव के सभी जाति के लोगों को अपनी सेना में शामिल किया तथा उनको हरावल तक भी पहुंचाया। उनकी सेना में राणा पूंजा, हकीम खान सूर जैसे महान पराक्रमी योद्धा थे। राणा प्रताप ने सांप्रदायिक सद्भाव की मिसाल पेश करते हुए अपने हरावल दस्ते का नेतृत्व हकीम खान सूर को सौंपा। वे एक महानायक व सच्चे देशभक्त थे, उन्होंने अपने देश कि खातिर हर संकट को हंसते हंसते सहन किया, ऐसे वीर पुरुष राष्ट्र की अमूल्य धरोहर है। इस शाखा में श्री क्षत्रिय युवक संघ के सैकड़ों स्वयंसेवक मौजूद रहे। उल्लेखनीय है कि 9 मई को महाराणा प्रताप जयंती आंग्ल तिथि अनुसार थी और ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया तद्नुसार 13 जून को भारतीय पंचांग अनुसार जयंती है। बाड़मेर संभाग की वर्चुअल शाखा में इन दोनों तिथियों के बीच आने वाले हर सोमवार को महाराणा प्रताप से संबंधित विषयों पर उद्बोधन होंगें। इसमें सभी जाति, वर्ग व संगठनों के विद्वजनों को आमंत्रित किया जाएगा। इसी क्रम में 10 मई को संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक व प्रसिद्ध शिक्षाविद कमलसिंह चूली का सानिध्य मिला।

पत्रिका की मयार्दाहीन टिप्पणी का विरोध

राजस्थान पत्रिका के प्रधान संपादक गुलाब कोठारी ने अपने अखबार के मुख्य पृष्ठ पर 30 अप्रेल को प्रकाशित अग्रलेख में पूर्व महाराजाओं के लिए 'मयार्दाहीन महाराजा' टिप्पणी की। समाज इस टिप्पणी से आहत हुआ एवं सब ओर से गुलाब कोठारी की इस प्रकार की मयार्दाहीन टिप्पणी का विरोध होने लगा। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन ने इस बाबत गुलाब जी कोठारी को पत्र लिखकर अपना ऐतराज जताया और उसे उनकी मेल आई डी पर भेजा। सब ओर से उस पत्र की प्रतियां भेजी जाने लगी। पत्रिका के एवं उसके संपादक के फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम आदि अकांट्स पर विरोध जताया गया। पत्रिका को अपनी गलती का अहसास हुआ एवं अगले दिन इसका खंडन छाप कर खेद प्रकट किया। हालांकि यह खेद प्रकटीकरण भी औपचारिकता जैसा ही था लेकिन हमारा विरोध उनको बैकफुट पर लाया। समाज के लोगों की यह जागृति आवश्यक है और सुखद पहलु यह है कि शनैः शनैः यह जागृति घटित हो रही है। हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम इस जागृति को बनाये रखें एवं हमारी मर्यादा के अनुरूप अपना विरोध प्रकट करें जिससे हर कोई हमारे पर अंगुली उठाने से बाज आये।

संघ का आह्वान, 'हम अपना व्यय स्वयं वहन करें'

कोरोना महामारी का सर्वाधिक रक्षात्मक उपाय टीकाकरण है। इतनी बड़ी जनसंख्या का टीकाकरण बड़ा काम है। सरकारें अपने संसाधनों से ऐसा कर रही हैं, हम इसमें सहयोगी बनें इसके लिए संघ ने संचालन प्रमुख जी ने यह संदेश प्रसारित किया है कि कम से कम हम अपना वैक्सीनेशन का खर्च स्वयं उठायें। इस सहयोग के लिए राजस्थान सरकार ने एक बैंक खाता जारी किया है। संचालन प्रमुख जी इस खातें के नंबर भी प्रसारित किए हैं।

मातेश्वरी स्कूल को बनाया सेफहोम

बाड़मेर के भिंयाड निवासी राजेंद्र सिंह (द्वितीय) ने अपने विद्यालय मातेश्वरी विद्या मंदिर को गांव के लोगों के आइसोलेशन हेतु सेफ होम के रूप तैयार किया है। प्रशासन के सहयोग के लिए तैयार इस सेफहोम में 40 बेड लगाकर वहां रहने वालों के भोजन आदि की भी व्यवस्था की गई है। राजेंद्र सिंह संघ के स्वयंसेवक हैं एवं शिव प्रांत के प्रांतप्रमुख हैं।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org